विराह के क्षण - नयन कस्तुरी

विराह जो अब हम हो गए,
छीन सी गई है, मुस्कान मेरी..!
छूटते हुए हाथों के संग ही,
बिछड़ सी गई है, कश मेरी..!

प्रेम ह्रदय में था तुम्हारे भी,
परंतु चुप तुम यूं रेह गई..!
क्यों पवन से इस प्रेम को,
छुपाने की बात आ गई..!
प्रियमा, मुझसे भी क्यों,
तुम ये कह ना पाई..!

देखने एक दूजे को,
तरसे थे हम युगों से कहीं..!
और, मिलते ही फीर बिछड़ गए..!
हम पास आते ही, दूर हो गए,
मिलन के ऋतु में ही हम,
पुनः विराह हो गए..!

नीयती में था, कुछ ऐसा लिखा,
की प्रेम ही मेरा, मुझसे छीन गया..!
चाहत थी जिसकी युगों से कहीं,
उसको पलभर में ही खो दिया..!
हारा मैं, उन्हीं क्षण में कहीं,
स्वतः को भी कहीं खो दिया..!

प्रवाहती हो, तुम मुझमें ही,
पर साथ नहीं हो, तुम मेरे..!
बिन तुम, भाती नहीं ये श्वाश मुझे,
हैं प्राथना उस परमात्मा से यहीं,
के ले जाए अब, वो प्राण मेरे..!

तुम ही हो, प्राण श्वास मेरी,
सार जीवन का मेरे, तुम ही तो हो..!
तुम ही हो जीने की आँस मेरी,
रंग विचारों के मेरे, तुम ही तो हो..!

रास ना आए ये जीवन मुझे,
तुम बिन, आए ना, निंदिया मुझे..!
चैन है नहीं अब, मन को मेरे,
और ना ही लग रहीं हैं भूख मुझे..!
नित्य रहें नयनों को आंस यहीं
के देखना वो पुनः तुम्हें..!

प्रेम का ज्ञान है नहीं, मुझे प्रिए,
अब, तुम ही समझाओं ना, मुझे..!

आहत हुआ है ये मन मेरा,
संयम नहीं रहा अब मेरा, इस क्रोध पर,
प्रियतमा, तुम ही शांत कराओं ना, मुझे..!

आंस है बस मन में यहीं, के,
विराह के ये तूफान थम जाएँ..!
प्रेम के शुष्क वृक्षों पर,
मिलन के वर्षा पुनः हो जाएँ..!

~ Nayan Kasturi